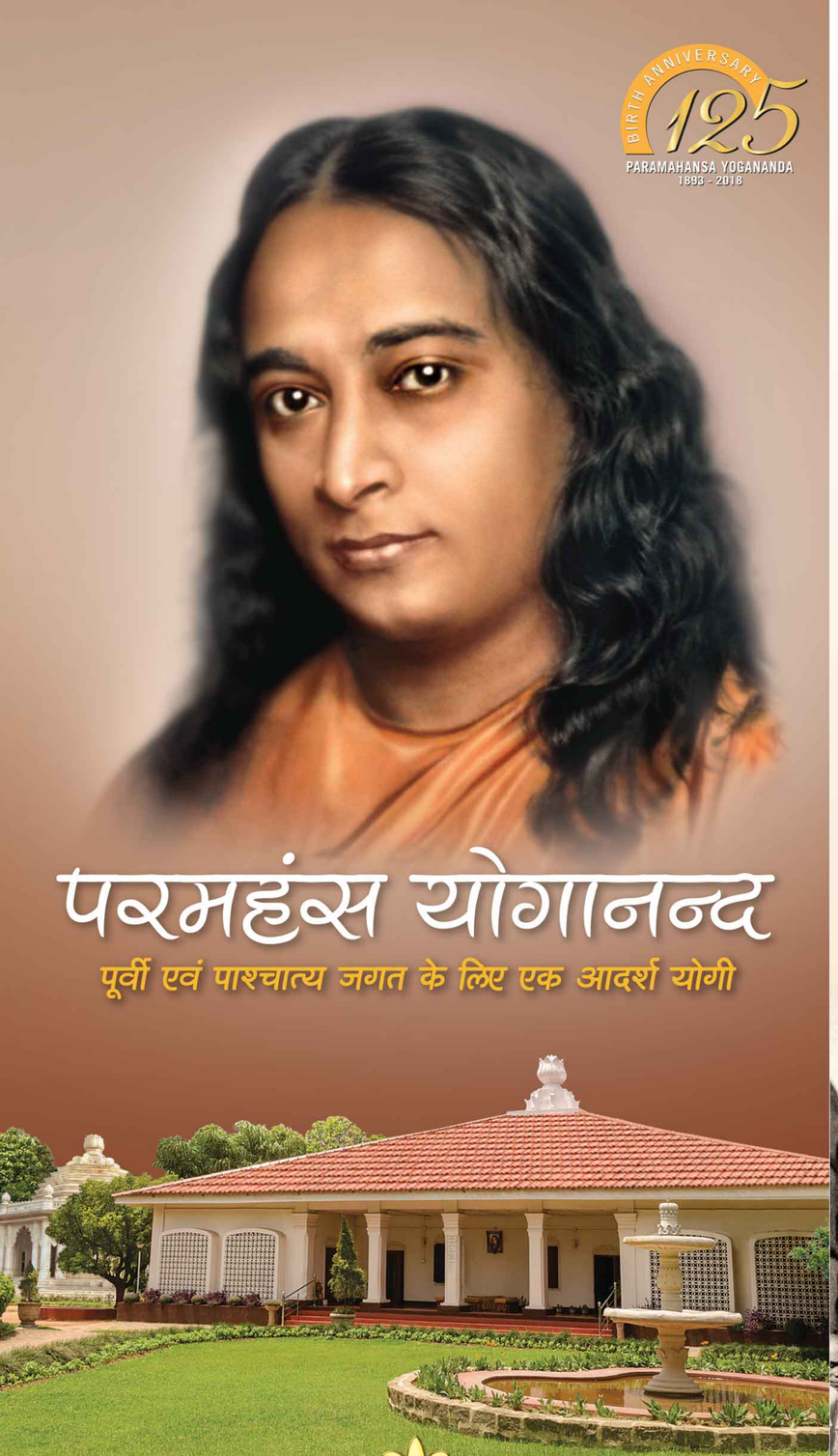

परमहंस योगानन्द

पूर्वी एवं पाश्चात्य जगत के लिए एक आदर्श योगी

योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ़ इण्डिया
1917 में परमहंस योगानन्दजी द्वारा स्थापित

परमहंस योगानन्द

(जनवरी 5, 1893 - मार्च 7, 1952)

आध्यात्मिक गौरव ग्रन्थ *Autobiography of a Yogi* (*योगी कथामृत*) के लेखक और हमारे समय की एक महान् आध्यात्मिक विभूति के रूप में परमहंस योगानन्द विश्व भर में सम्मानित हैं। भारत के आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति पश्चिम में अधिक जागरूकता फैलाने तथा इसे लोकप्रिय बनाने में उनका अत्यन्त व्यापक योगदान रहा है। वे "पश्चिम में योग के जनक," माने जाते हैं तथा विश्व के आध्यात्मिक परिदृश्य पर उन्होंने अमिट छाप छोड़ी है।

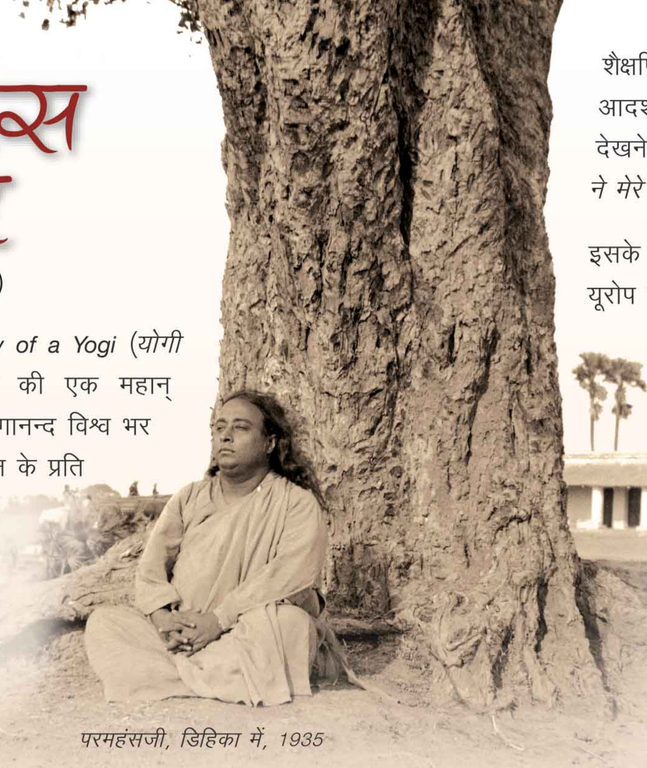

परमहंसजी, डिहिका में, 1935

5 जनवरी, 1893 को गोरखपुर के पावन शहर में एक समृद्ध एवं धार्मिक बंगाली परिवार में उनका जन्म हुआ। उनका पारिवारिक नाम मुकुन्द लाल घोष था। परमहंस योगानन्दजी के जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही उनमें असामान्य चेतना एवं आध्यात्मिक अनुभूति स्पष्ट दिखने लगी। अपनी ईश्वर की खोज में मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये एक ईश्वर-प्राप्त गुरु की उनकी खोज उन्हें अपनी युवावस्था में भारत के अनेक सन्तों एवं दार्शनिकों के पास ले गई।

स्वामी श्रीयुक्तेश्वरजी एवं परमहंस योगानन्दजी एक धार्मिक जुलूस में, कलकत्ता, 1935

1910 में, 17 वर्ष की आयु में, वे श्रद्धेय सन्त स्वामी श्रीयुक्तेश्वरजी से मिले, और उनके आश्रम में अपने जीवन के अगले दस वर्षों का अधिकांश समय व्यतीत किया। 1915 में, कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने भारत की प्राचीन स्वामी परम्परा में संन्यास ग्रहण किया, और उस समय उन्हें योगानन्द नाम प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ है : *योग* (ईश्वर से एकरूपता) द्वारा *परमानन्द* की प्राप्ति।

योगानन्दजी ने, 1917 में एक "आदर्श-जीवन" विद्यालय की स्थापना के साथ अपना जीवन-कार्य प्रारम्भ किया। इस विद्यालय में उन्होंने आधुनिक शैक्षणिक तरीकों के साथ-साथ योग प्रशिक्षण के आध्यात्मिक आदर्शों का भी समावेश किया। 1925 में इस विद्यालय को देखने आये राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने लिखा था : *"इस संस्था ने मेरे मन पर गहरा प्रभाव डाला है।"*

इसके दस वर्ष बाद 1935-36 में, जब परमहंस योगानन्दजी यूरोप तथा मध्य पूर्व के देशों की यात्रा करते हुए भारत वापस आये तब फिर से उनकी महात्मा गाँधी से मुलाकात हुई, और गाँधीजी के निवेदन पर परमहंसजी ने उन्हें तथा उनके कुछ अनुयायियों को क्रियायोग के आध्यात्मिक विज्ञान की दीक्षा प्रदान की।

परमहंस योगानन्दजी ने 1917 में, योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ़ इण्डिया (वाइ.एस.एस.) की स्थापना की, तथा 1920 में, वे भारत के पवित्र एवं मुक्तिप्रदायक राजयोग विज्ञान को पश्चिम में ले गए, जहाँ उन्होंने लॉस एन्जिलिस, कैलीफोर्निया (अमेरिका) में, इसकी सहयोगी संस्था, सेल्फ़-रियलाइज़ेशन फ़ेलोशिप की स्थापना की।

परमहंस योगानन्दजी की धर्म-निरपेक्ष शिक्षायें इतनी सार्वभौमिक है कि उन्हें सभी धर्मों के तथा समाज के सभी वर्ग के लोग स्वीकार कर सकते हैं। योगानन्दजी ने एक ईश्वर की छत्रछाया में सम्पूर्ण मानव जाति की अन्तर्निहित एकता को प्रदर्शित करके हमारे वैश्विक परिवार के विविध लोगों और धर्मों के बीच अधिक समझ एवं सद्भावना विकसित करने, तथा सभी राष्ट्रों के लोगों को – चाहे उनकी राष्ट्रीयता, जाति, एवं धर्म जो भी हों – ध्यान की ऐसी निश्चित वैज्ञानिक राजयोग प्रविधियाँ प्रदान करने के उद्देश्य से

सेल्फ़-रियलाइज़ेशन फ़ेलोशिप के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय का प्रशासनिक भवन

महात्मा गाँधी के वर्धा आश्रम में, 1935। योगानन्दजी, गाँधीजी द्वारा लिखकर दिया गया एक नोट को पढ़ रहे हैं।

वाइ.एस.एस./एस.आर.एफ़ की स्थापना की जो कि व्यक्ति को उसकी अपनी पूर्ण क्षमता तथा मानव आत्मा की दिव्यता के बोध की ओर ले जायें, और यही प्रविधियाँ क्रियायोग के रूप में जानी जाती हैं।

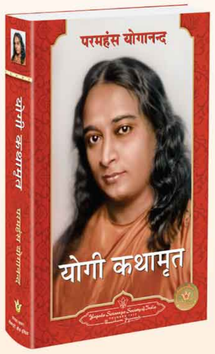

1946 में परमहंसजी के जीवन – चरित्र, *Autobiography of a Yogi,* का प्रथम प्रकाशन हुआ, तथा इसके आगामी संस्करणों में उनके द्वारा इसका विस्तार किया गया। प्रारम्भ से ही अपने क्षेत्र में एक अभूतपूर्व कृति के रूप में मान्यता प्राप्त, यह पुस्तक 72 वर्ष पूर्व अपने प्रथम प्रकाशन के बाद से आज तक निरन्तर मुद्रित हो रही है। इसकी गिनती 20वीं शताब्दी की 100 सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक पुस्तकों में की जाती है और आज भी यह योग एवं पौर्वात्य आध्यात्मिक दर्शन पर एक महत्वपूर्ण और सबसे अधिक पढ़ने योग्य पुस्तक मानी जाती है। इसका 14 भारतीय भाषाओं सहित, कुल 50 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

7 मार्च, 1952 को, लॉस एन्जिलिस के बिल्टमोर होटल में, अमेरिका में भारत के राजदूत, डॉ. बिनय आर. सेन के सम्मान में आयोजित भोज के अवसर पर अपना संक्षिप्त संबोधन समाप्त करते ही, इस महान् गुरु ने *महासमाधि*—में प्रवेश किया।

उनके देह-त्याग पर एक असाधारण घटना घटित हुई थी। इस संबंध में फॉरेस्ट लॉन मेमोरियल-पार्क शवागार के निर्देशक द्वारा प्रमाणित पत्र के कुछ अंश इस प्रकार हैं : *"उनके शरीर त्यागने के बीस दिन बाद भी उनके शरीर में किसी प्रकार की विकृति दिखाई नहीं पड़ी।... किसी शरीर की ऐसी पूर्ण संरक्षण की अवस्था, जहाँ तक हम शवागार के इतिहास से जानते हैं, अद्वितीय है।...ऐसा प्रतीत हो रहा था कि योगानन्दजी का पार्थिव शरीर निर्विकारिता की एक चमत्कारिक अवस्था में था।"*

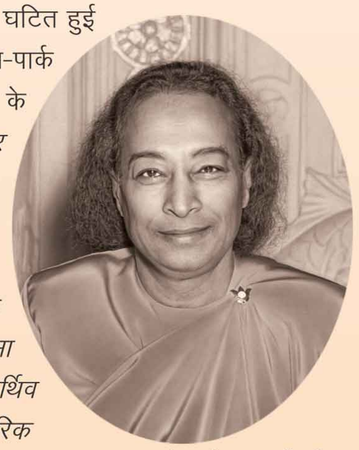

परमहंस योगानन्दजी की महासमाधि से एक घण्टे पूर्व लिया गया फोटो

परमहंस योगानन्दजी की महासमाधि की पचीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर, मानवता के आध्यात्मिक उत्थान में उनके दूरगामी योगदान को भारत सरकार द्वारा औपचारिक मान्यता प्रदान की गई। उनके सम्मान में एक संस्मरणात्मक डाक टिकट जारी करते हुए भारत सरकार द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई जिसका एक अंश इस प्रकार है :

"ईश्वर के लिये प्रेम और मानवता की सेवा का आदर्श, परमहंस योगानन्द के जीवन में पूर्ण रूप से व्यक्त हुआ।... यद्यपि उनके जीवन का अधिकांश भाग भारत से बाहर व्यतीत हुआ, तथापि उनका स्थान हमारे महान् संतों में है। उनका कार्य लगातार बढ़ रहा है और उसकी कांति विश्व भर के सत्यान्वेषियों को ईश्वर-प्राप्ति के मार्ग पर आकर्षित कर रही है।"

श्रीमद्भगवद्गीता की योगानन्दजी की बहुप्रतीक्षित व्याख्या *(God Talks With Arjuna)* 1995 में प्रकाशित हुई, जिसका हिन्दी अनुवाद, *ईश्वर-अर्जुन संवाद*, का विमोचन 2017 में भारत के राष्ट्रपति, माननीय श्री रामनाथ कोविंद की उपस्थिति में योगदा मठ, राँची में किया गया। यह व्याख्या भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा साधनारत योगियों को दिये गए मार्गदर्शन के गूढ़ अर्थ का गहन ज्ञान प्रदान करती है।

परमहंस योगानन्दजी की अन्य रचनाओं में सम्मिलित हैं : *The Second Coming of Christ: The Resurrection of the Christ Within You,* जीसस क्राइस्ट की सार्वभौमिक शिक्षाओं पर उनकी बहुप्रशंसित व्याख्या; *Rubaiyat of Omar Khayyam, Wine of the Mystic: A Spiritual Interpretation,* उमर खय्याम की रूबाईयों पर एक आध्यात्मिक व्याख्या; दैनिक जीवन में ईश्वर-बोध पर व्याख्यानों एवं लेखों का संग्रह; कविताओं और प्रार्थनाओ के दो संग्रह; तथा आध्यात्मिक मार्गदर्शन से भरपूर कई रचनायें। योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ़ इण्डिया महान् गुरु द्वारा अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में दिये गए व्याख्यानों की दुर्लभ रिकार्डिंग्स को भी प्रकाशित करती है।

2014 में परमहंसजी के असाधारण जीवन को दर्शाती एक पुरस्कार-प्राप्त डाक्यूमेंट्री फीचर फ़िल्म *Awake : The Life of Yogananda,* बनी तथा इसका विश्वव्यापी प्रदर्शन हुआ।

आज, पृथ्वी पर उनके अवतरित होने के 125 वर्ष बाद, परमहंस योगानन्दजी को भारत माता के एक महान् आध्यात्मिक पुत्र, पश्चिम में योग के जनक, तथा दिव्य प्रेम के ऐसे अवतार के रूप में पहचाना जा रहा है जिन्होंने अपने प्रेम में सम्पूर्ण विश्व को सम्मिलित किया।

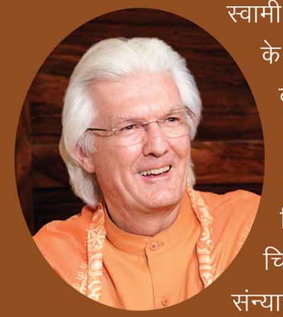

स्वामी चिदानन्द गिरि वाइ.एस.एस./एस. आर.एफ़ के अध्यक्ष एवं आध्यात्मिक प्रमुख हैं। वे चालीस वर्षों से संन्यासी हैं, तथा उन्होंने अनेक वर्षों तक परमहंस योगानन्दजी के निकट रहे शिष्यों से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। एक निदेशक मण्डल, अध्यक्षीय कार्यों में स्वामी चिदानन्दजी की सहायता करता है, जिसमें ऐसे संन्यासी हैं जिन्हें परमहंसजी के निकट-शिष्यों द्वारा प्रशिक्षित किया गया है।

अध्यक्ष तथा निदेशक मण्डल के मार्गदर्शन में, वाइ.एस.एस./एस.आर.एफ़. के संन्यासी एवं संन्यासिनियाँ संस्था के आश्रमों में अनेक प्रकार से अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं : परमहंस योगानन्दजी तथा उनके निकट-शिष्यों के लेखों, व्याख्यानों और सत्संगों का प्रकाशन; संस्था के लगभग 800 मन्दिरों, ध्यान केन्द्रों, और रिट्रीट केन्द्रों की देखभाल; विश्व के अनेक शहरों में प्रतिवर्ष व्याख्यान एवं कक्षाएं आयोजित करना; विश्वव्यापी प्रार्थना मण्डल का संयोजन करना, जिसमें ऐसी मण्डलियाँ और लोग शामिल हैं जो उन लोगों के लिये, जिन्हें शारीरिक, मानसिक, या आध्यात्मिक रूप से सहायता की ज़रूरत है, विशेष रूप से प्रार्थना करने के साथ ही विश्व शान्ति एवं सद्भावना के लिये भी प्रार्थना करते हैं; फोन, पत्रों, एवं व्यक्तिगत रूप से भी योगदा सत्संग/सेल्फ़-रियलाइज़ेशन फ़ेलोशिप शिक्षाओं के छात्रों को आध्यात्मिक परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रदान करना। वाइ.एस.एस./एस.आर.एफ़. के अनेक समर्पित सेवक भी परमहंस योगानन्दजी के विश्वव्यापी कार्य में कई महत्वपूर्ण तरीकों से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। वे वाइ.एस.एस./एस.आर.एफ़. आश्रमों में संन्यासियों के साथ कार्य करते हुए, विश्व भर के अनेक ध्यान केन्द्रों में कई उत्तरदायित्वों को पूरा कर रहे हैं।

yssofindia.org

The printing of this leaflet is supported by the Ministry of Culture, Government of India.

Copyright © 2018 Yogoda Satsanga Society of India/Self-Realization Fellowship. All rights reserved.